धर्मशाला

एक बर तीर्थ यात्रा करते हुए सुथरे शाह जी पहाड़ों की तरफ चले गए। कांगड़े में एक सेठ जी ने शहर के बाहर एक धर्मशाला बना रखी थी। सेठ ने घर्मशाला में एक प्रबन्धक रखा हुआ था। जो उसकी देखभाल करता था और मुसाफिरों को रहने के लिए स्थान देता था सुथरे शाह जी को यह पता चला कि यह प्रबन्धक लोभी और क्रोधी है। केवल धनी लोगों को ही उस धर्मशाला में ठहरने देता है। रात दस बजे सुथरे शाह जी धर्मशाला में गए और बंद दरवाजे को खटखटाया। अन्दर से आवाज आई 'कौन है?'

'मैं एक गरीब मुसाफिर हूँ, रात काटनी है दरवाजा खोलो।' सुथरे शाह जी ने कहा

अन्दर से आवाज आई– 'जाओ, इस समय यहाँ कोई स्थान नहीं है।'

'महाराज - इस समय ही तो स्थान चाहिए, सुबह तो हम चले ही जाऐंगे', सुथरे शाह जी ने कहा।

अन्दर से फिर आवाज आई– 'यह तेरे बाप का घर नहीं जो तू अन्दर आ जाये, यहाँ कोई स्थान नहीं है, दफा हो जा।'

'मैं तो दफ़ा नहीं होता तुझे दफ़ा करके छोड़ूँगा, गरीबों को अन्दर ही नहीं आने देना।' सुथरे शाह जी ने बाहर से उत्तर दिया।

इतना कहकर सुथरे शाह जी धर्मशाला के मालिक सेठ के घर जा पहुँचे और उनका दरवाजा खटखटाया अन्दर से आवाज आई, 'कौन है?'

'मै एक मुसाफिर हूँ, आपके घर रात काट कर सुबह चला जाऊँगा।' सुथरे शाह जी ने कहा।

अन्दर से आवाज आई–'कृपा करके आप धर्मशाला चले जाओ, वहाँ पर तुम्हें रहने के लिए जगह मिल जाएगी।' सेठ ने अन्दर से आवाज दी।

'सुथरे शाह जी' ने कहा, 'ठीक है महाराज मै चला जाता हूँ। यह कहकर सुथरे शाह जी ने धर्मशाला पहुँचकर दरवाजा खटखटाया, अन्दर से फिर वही प्रबन्धक की आवाज आई, 'कौन है?'

'मै एक मुसाफिर हूँ, सेठ ने मुझे भेजा है और कहा है धर्मशाला में जाकर आराम करूँ।' सुथरे शाह जी ने उत्तर दिया।

धर्मशाला के प्रबन्धक ने दरवाजा खोला और सुथरे शाह जी ने कहा 'हर दम नानक शाह, धरम दा बेड़ा बन्ने ला।'

'क्यों भाई, आप कौन हो? आपका नाम क्या है? आप कहाँ से आए हो?' धर्मशाला के प्रबन्धक ने कहा।

सुथरे शाह जी ने उत्तर दिया, 'देखते नहीं मैं एक आदमी हूँ, फकीर हूँ घूमते-फिरते आराम करने के लिए आ गया हूँ। अब सेठ का नाम सुनकर दरवाजा खोल दिया पहले तो दरवाजा भी नहीं खोला था।'

'अच्छा अभी तू ही आया था जो कह रहा था कि तुझे दफ़ा करके छोड़ूँगा। जा, यहाँ से चला जा, तेरे जैसों के लिए यहाँ कोई जगह नहीं।' इतना कहकर प्रबन्धक ने दरवाजा फिर से बन्द कर लिया।

सुथरे शाह ने फिर सेठ के घर पहुँकर दरवाजा खटखटाया। फिर अन्दर से आवाज आई 'कौन है?'

'जी, मैं एक गरीब मुसाफिर, रात काटने के लिए जगह चाहिए, सुबह होते ही चला जाउँगा।' सुथरे शाह जी ने कहा।

सेठ ने दरवाजा खोल और कहा, 'भाई, तुझे पहले भी कहा था धर्मशाला में चल जा वहाँ कमरा भी मिल जाएगा और बिस्तर भी। आखिर मुसाफिरों के आराम के लिए ही तो धर्मशाला बनी हुई है।'

सुथरे शाह जी ने कहा, 'महाराज, मैं तो कई बार वहाँ गया, पहले तो वह दरवाजा ही नहीं खोलता। आपका नाम लिया तो दरवाजा खोला। देखा वहाँ धर्म तो कोई नहीं था बस एक शाला था जो लड़ने लगा और कहने लगा यहाँ गरीबों के लिए कोई जगह नहीं है।' सुथरे शाह जी ने कहा। सेठ सुथरे शाह जी की बात सुनकर मुस्कुराया और अपने बेटे को सुथरे शाह जी के साथ भेज दिया। सुथरे शाह जी ने फिर से दरवाजा खटखटाया।

अन्दर से आवाज आई, 'जाता है या नहीं, दफ़ा हो जा, इस वक्त तंग मत कर।' सुथरे शाह जी ने कहा, ' सेठ ने अपने बेटे के साथ मुझे भेजा है।' 'बड़ा आया सेठ का बच्चा। इस समय सेठ के लड़के का यहाँ क्या काम? वह तो अपने घर सो रहा होगा। मैं किसी सेठ और उसके लड़के को नहीं जानता। कोई सेठ होगा तो अपने घर में होगा। इस समय दरवाजा नहीं खुलेगा।' प्रबन्धक ने कहा।

इस पर सेठ के लड़के को क्रोध आ गया वह कड़क कर बोला - 'अरे दरवाजा खोल, बाहर निकल कर देख, कौन है और क्यों आया है? तुझे कोई शर्म लाज है या नहीं। तू इसी प्रकार मुसाफिरों को तंग करता है।'

धर्मशाला के प्रबन्धक ने दरवाजा खोलकर जब बाहर सेठ के बेटे को देखा तो डर गया। हाथ जोड़ कर माफी माँगने लगा। सेठ के लड़के ने कहा, 'यह धर्मशाला है, गरीब मुसाफिरों के लिए है, यदि मुसाफिरों को आराम करने के लिए ही यहाँ स्थान न मिले तो इसे बनवाने से क्या लाभ? इस मुसाफिर ने सच ही कहा था कि यहाँ धर्म तो कहीं नहीं है। एक शाला है जो लड़ता रहता है। यह आज हमने स्वयं देख लिया है कि यहाँ मुसाफिरो को तंग किया जाता है। सुबह यहाँ से दफा हो जाना, हम किसी और को प्रबन्धक रख लेगें जिसके दिल में दया और धर्म की भावना हो।' प्रबन्धक उसके पैरों में गिर कर क्षमा माँगने लगा! 'महाराज' गलती हो गई क्षमा करो, आगे से ऐसा नही होगा।'

सेठ का लड़का चला गया। सुथरे शाह जी ने कहा, 'हरदम नानकशाह धर्म दा बेड़ा बन्ने ला'।

धर्मशाला के प्रबन्धक ने मन ही मन क्रोधित होते हुए कमरा और बिस्तर सुथरेशाह जी को दे दिया।

सुथरे शाह जी ने रात आराम किया और प्रातः काल होने से पहले ही फिर उसका दरवाजा खटखटाया कि धर्मशाला का दरवाजा खोलो हमने जाना है।

प्रबन्धक को गुस्सा आया कि पहले तो सोचते हुए नींद नहीं आई थी, अब आँख लगी ही थी तो इसने उठा दिया पर वह कुछ बोला नहीं चुपचाप उठा और दरवाजा खोल दिया।

सुथरे शाह जी अपनी मस्ती में गाने लगे और गाते-गाते चले गये।

हरदम नानकशाह धरम दा बेड़ा बन्ने ला।
बेड़ा बन्ने ला सखी नूँ सुख दे नाल वसा।।